**गुरु नानक – सबद २०**

**असंख मूरख अंध घोर ॥**

**जपु, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ४**

असंख मूरख अंध घोर ॥
असंख चोर हरामखोर ॥
असंख अमर करि जाहि जोर ॥
असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥
असंख पापी पापु करि जाहि ॥
असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥
असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥
असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥
नानकु नीचु कहै वीचारु ॥
वारिआ न जावा एक वार ॥
जो तुधु भावै साई भली कार ॥
तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

**सार:** मानव चरित्र को सकारात्मक और नकारात्मक लक्षणों में बांटा जा सकता है। ये लक्षण हमारे व्यवहार,विचारों, भावनाओं और करमो को प्रभावित करते हैं। ये एक अंदरूनी दिशा सूचक के रूप में काम करते हैं जो हमें सदगुणों या अवगुणों के साथ जीवन जीने का विकल्प चुनने में मार्गदर्शन करते हैं।

असंख मूरख अंध घोर ॥
बहुत हैं जो अहंकार के कारण अज्ञानी हैं और भ्रष्टाचार के अंधकार में भटक रहे हैं।

असंख चोर हरामखोर ॥
अनेक हक़मारने वाले लुटेरे हैं जो उस चीज़ का उपयोग करते हैं जिस पर उनका अधिकार नहीं है।

असंख अमर करि जाहि जोर ॥

असंख्य लोग हैं जो अमर होने की इच्छा रखते हैं और ज़ुल्म का सहारा लेते हैं।

असंख गलवढ हतिआ कमाहि ॥

अनेक लोग हैं जो दूसरों को शारीरिक नुकसान पहुँचाते हैं।

असंख पापी पापु करि जाहि ॥

बहुत से लोग हैं जो अधर्मी बने रहते हैं, अपराध पर अपराध करते रहते हैं।

असंख कूड़िआर कूड़े फिराहि ॥

बहुत से लोग हैं जो बेईमान हैं और छल-फ़रेब में फंस जाते हैं।

असंख मलेछ मलु भखि खाहि ॥

बहुत से लोग हैं जो दुष्ट हैं और दुष्टता में लगे हुए हैं।

असंख निंदक सिरि करहि भारु ॥

बहुत से लोग हैं जो निंदा करते हैं और अपनी नकारात्मकता का बोझ ढोते हैं।

नानकु नीचु कहै वीचारु ॥

नानक, विनम्रतापूर्वक, विचार करने के बाद ये निष्कर्ष निकालते हैं कि एक व्यक्ति की सामाजिक स्थिति के बजाय करम ही उसका मूल्य एक नीच व्यक्ति के रूप में निर्धारित करते हैं।

वारिआ न जावा एक वार ॥

इसकी विशालता को एक पल के लिए भी समेटा नहीं जा सकता।

जो तुधु भावै साई भली कार ॥

जो कुछ भी प्रकृति के नियमों द्वारा निर्धारित है वह सार्वभौमिक कल्याण के लिए उत्कृष्ट है।

तू सदा सलामति निरंकार ॥१८॥

सर्वव्यापी चेतना अनंत और निराकार है। (१८)

**तत्त्व:** गुरु नानक कहते हैं किसी की हैसियत अक्सर आर्थिक पृष्ठभूमि, जाति या सत्ता की स्थिति जैसे बाहरी कारकों से मापी जाती है। ये कारक शान तो ला सकते हैं, लेकिन ये किसी सदगुणी चरित्र के मानदंड नहीं हैं। सदगुण ही सार्थक जीवन की बुन्याद हैं। वे हमारे चरित्र को आकार देते हैं, हमारी बातचीत को प्रभावित करते हैं, और हमारे आस पास के माहौल पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करने के लिए हमारे पूर्ण कल्याण में योगदान करते हैं।

---


सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

**Oneness In Diversity Research Foundation**

**वेबसाइट:** [OnenessInDiversity.com](OnenessInDiversity.com)

**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**